Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.177, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, MAR–APR, 2018, VOL- 5/44

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य की वर्तमान प्रासंगिकता

राधेश्याम, Ph. D.
असिस्टेण्ट प्रोफेसर– हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, गौंड़ा, अलीगढ़

Abstract

प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम स्वतंत्रता के समय भारत की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को वर्तमान की तुलना प्रस्तुत की गई है। दिनकर के विशाल साहित्य संग्रह से लोगों में आत्मविश्वास, देश–प्रेम, वीरता, ईमानदारी, स्वाभिमान, कर्तव्यपरायणताजैसे गुणों का विकास होता है।राश्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का संपूर्ण साहित्य वर्तमान समय में हमारे लिए प्रासंगिक है। देश में चारों तरफ अशांति, हाहाकार, भ्रष्टाचार, लूटपाट, रिश्वतखोरी, बेईमानी आदि का दबदबा है। मानवता के नाम पर अव्यवस्था फैलाई जा रही है। स्वार्थ के लिए लोग अपने सगे–सम्बन्धियों का भी गला घोटने से परहेज नही कर रहे हैं। जनता की रखवाली करने वाली पुलिस मूकदर्शक बनकर रह गई है। जनता जहां से सही न्याय प्राप्त करने की आशा कर रही है, वहां से उसे सही न्याय नहीं मिल पा रहा है और यदि न्याय मिलता भी है तो काफी बिलम्ब हो जाने के बाद मिलता है। ऐसे विषम वातावरण में जनता देश के कर्णधार एवं नेताओं से देश में शांति व सुरक्षा प्राप्त करने की आशा कर रही है लेकिन वह स्वयं ही भ्रश्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। जनता को हित रखने की बजाय वह अपनी जेब भरने की कोशिश कर रहे हैं। राजनीति तथा राजनीति से जुड़े लोगों के ऊपर से अब आमजन का विश्वास धीरे–धीरे उठता जा रहा है।

शब्दावलीः *साहित्य के सामाजिक प्रभाव, जन जागरण, काव्यधारा, अनैतिकता।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

अध्ययन के उद्देश्यः प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं–

1.रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में जन जागरण का अध्ययन करना।

2. रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य के भारतीय समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की विधि :

शोध अध्ययन को पूरा करने में विधि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विधि के द्वारा ही पता चलता है कि शोध अध्ययन की प्रकृति किस प्रकार की है? शोध अध्ययन को कितने प्रकरण में बाँटकर अध्ययन किया जाना है? शोध

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अध्ययन को कहाँ गति देनी है तथा किस विशय को प्रकाश में लाना है? इन सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ही शोध विधि को सम्मिलित किया जाता है। शोध की प्रकृति के अनुसार कई विधियाँ प्रचलन में हैं जैसे–प्रयोगात्मक विधि, विश्लेषणात्मक विधि, विवरणात्मक विधि, ऐतिहासिक विधि, तुलनात्मक विधि आदि। शोध की विधि के द्वारा ही हम अपने अध्ययन को सही पथ पर लेकर चलते हुए उद्देश्य को प्राप्त कर पाते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति साहित्यिक है इसलिए इस शोध अध्ययन में 'विश्लेषणात्मक विधि', 'आलोचनात्मक विधि' तथा 'गवेशणात्मक विधि' का प्रयोग किया गया है। इन विधियों की सहायता से दिनकर जी के साहित्य में जन जागरण एवं नारी चेतना को समझने का प्रयास किया गया है। 'विश्लेषणात्मक विधि' के द्वारा दिनकर की गद्य एवं पद्य रचनाओं का विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषण एवं विवेचनः

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी साहित्य में 'राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा' के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। 'दिनकर' जी आधुनिक काल के उन कवियों की श्रेणी मे शामिल हैं जिन्होंने हिंदी साहित्य जगत पर छाए हुए बादलों के कुहासे को चीरकर राष्ट्रीयता और मानवता का प्रखर प्रकाश फैलाया। उनके काव्य में जहाँ एक ओर गोस्वामी तुलसीदास, मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवियों की तरह लोकमंगल की भावन निहित है वहीं दूसरी ओर जयशंकर प्रसाद, कालिदास जैसे कवियों की तरह सौंदर्य की भावना एवं प्रेमाभिव्यक्ति भी है।

'जन–जागरण' अंग्रेजी के 'पब्लिक कोंसिसनेस' (Public-Consciousness) शब्द का हिंदी रूपांतरण है। 'जन' का सामान्य अर्थ व्यक्ति होता है। 'जागरण' का सामान्य अर्थ जागने की क्रिया से लिया जाता है। जागरण के अन्य शाब्दिक अर्थ–जागृति, सावधानी, पुनरुत्थान, चौक'ाी आदि माने जाते हैं। आजकल किसी बड़े धार्मिक कार्यक्रम, पर्व या उत्सव के अवसर पर रात्रि भर जागने की अवस्था को भी जागरण कहा जाता है, लेकिन साहित्य में जागरण का अर्थ इस संदर्भ में स्वीकार नहीं किया जाता है। साहित्य के क्षेत्र में प्रायः जागरण का अर्थ किसी आडंबर, अनैतिक रीति–रिवाजों, रूढ़ियों या पिछड़ेपन से मुक्त होने के लिए किए गए प्रयत्न से लिया जाता है।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जन–जागरण' से होने वाले परिवर्तन– 'जन–जागरण' से किसी देश या समाज में निम्नलिखित परिवर्तन देखने को मिलते हैं–

1. व्यक्ति अपनी उत्तरदायित्वों को अच्छी तरह से समझ लेता है, जिससे उन जिम्मेदारियों का अच्छी तरह से निर्वहन करता है।
2. व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर वह उनका प्रयोग करता है।
3. व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत होकर उनका पालन करने के लिए प्रोत्साहित होता है।
4. समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। सभी व्यक्ति एक–दूसरे का सम्मान करते हैं।
5. समाज में सभी व्यक्ति की स्वतंत्रता अक्षुण रहती है और किसी के अधिकारों का हनन नही होता है।

प्रगतिवादी साहित्यकारों ने मानव और मानवता के ऊपर मंडरा रहे भविष्य के खतरों के प्रति जनता को सचेत किया और उन्हें विभिन्न समस्याओं का सामना करने के लिए प्रेरित किया और उन्हें एक अच्छे भविष्य की ओर चलने के प्रति आशाान्वित किया। हिंदी साहित्य में आज हमें जिस जनचेतनावादी काव्य का विकास दिखायी देता है, उसका पुष्ट आधार प्रगतिवाद से प्राप्त होता है।

दिनकर के साहित्य का वर्तमान औचित्य–

रामधारी सिंह दिनकर छायावादोत्तर काल के उन कवियों में गिने जाते हैं जिन्होंने छायावाद की कल्पना के कुहासे से ढके मानव सौंदर्य के खोखलेपन को पहचान चुके थे। हिंदी की छायावादी कविता को कल्पना' ीलता की प्रवृत्ति से हटाकर यथार्थ और सत्य की दृढ़भूमि आसीन करने वाले कवियों में दिनकर का स्थान ०ीर्श पर है। उनकी ओजमयी वाणी ने हिंदी कविता को प्रेम एवं श्रृंगार की संकरी गलियों से निकालकर जीवन के संघर्ष पथ और यथार्थ के धरातल पर ला कर खड़ा किया था। दिनकर का साहित्य विशेशतः उस समय जन जागरण के लिए महत्वपूर्ण हथियार बनकर उभरा जब भारत अंग्रेजों की गुलामी कर रहा था। देश में चारों तरफ अंग्रेजी शिक्षा का बोलबाला था, भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा था और समाज में अनेक प्रकार की विषमताएं फैल गई थी। मानव स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने पारिवारिक

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सदस्यों को भी नहीं पहचान पा रहा था। अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त होने के लिए महात्मा गाँधी 'सत्याग्रह आंदोलन' और 'असहयोग आंदोलन' के अहिंसात्मक उपायों का सहारा ले रहे थे। देश में जन–जागरण की लहर चारों तरफ व्याप्त हो गई थी। कुछ कवि इस लहर में अपने आपको बड़ी तेजी के साथ लेचल रहे थे। श्री मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामनरेश त्रिपाठी आदि कवियों ने कविता में जागरण और राष्ट्रीयता का स्वर भरा था परंतु सच्चे अर्थों में भारतीय युवा वर्ग के निराश एवं हताशहृदय में **देशभक्ति** की उमंग लहराने वाले एकमात्र कवि उन दिनों दिनकर ही थे। उनकी कविता में अनुभूति की तीव्रता, भावों की गतिशीलता और प्रांत की पुकार हमेशा गूंजती रहती थी। स्वाधीनता के उपरांत भी जब–जब देश पर बाहरी आक्रमण के बादल मंडराये तब–तब दिनकर की सिंह दहाड़ ने जन–जन में राष्ट्रप्रेम और ओज भावना का संचार किया।

सन 1920 ईस्वी में गांधी जी द्वारा प्रेरित अहिंसक आंदोलन असफल हो चुका था। इससे देश के नवयुवकों के हृदय में आक्रोश उत्पन्न हो गया था। देश में अहिंसा के विरुद्ध उग्र भावनाओं का जो स्वर जल रहा था उसे अत्यंत सरल भाशा मे स्पष्ट करने का कार्य दिनकर ने किया। 'विपथगा' कविता में क्रांति कहती है–

''असि की नोकों से मुकुट जीत
अपने सिर उसे सजाती हूँ।
ईश्वर का आसन छीन,
कूद मैं आप खड़ी हो जाती हूँ।
थर–थर करते कानून, न्याय
इंगित कर जिन्हें नचाती हूँ।
भयभीत पातकी धर्मों से
अपने पग मैं धुलवाती हूँ।
सिर झुका घमंडी सरकारें
करती मेरा अर्चन–पूजन।''

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दिनकर का राष्ट्रीय स्वर कमजोर होने का नाम नहीं लेता बल्कि जैसे–जैसे वह साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ते जाते हैं, उनका विद्रोही स्वर भी तीव्रतर होता जाता है। इसीलिए वह कहते हैं–

''उर में दाह, कंठ में ज्वाला,
सम्मुख यह प्रभु का मरुस्थल है
जहाँ पथिक जल की झांकी में
एक बूँद के लिए विकल है
घर–घर देखा धुआँ पर सुना
वि ंव में आग लगी है
जल ही जल जन–जन रटता है
कंठ–कंठ में त्याग जगी है।''

जब भारत विदेशी आक्रमणकारियों से परेशान था, तब दिनकर ने राष्ट्र–रक्षा के लिए युवकों के शौर्य को चुनौती देना उचित समझा। इसके लिए वह अपनी ओजस्विता का परिचय देते हैं। दिनकर जी ने अपने रचना–कर्म से यह अहसास करा दिया था कि कविता में वह ०क्ति आज भी कायम है जो भ्रश्टाचार, अत्याचार, ०ोशण, अनैतिकता तथा उत्पीड़न के खिलाफ आग उगल सकती है। कविता किसी भी गलत परिस्थिति के खिलाफ भूचाल ला सकती है तथा सत्ता के मद में बेहोश राजनेताओं की नींद हराम कर सकती है। दिनकर का मानना है कि राष्ट्र की वास्तविक सत्ता जनता में सन्निहित है इसलिए उन्होंने जनता को ही 'राष्ट्रस्वामी' स्वीकार किया। वह जन–विरोधी शक्तियों को ललकारते हुए कहते हैं–

''सदियों की ठंडी–बुझी राग सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है
दो राह समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।''

चीन द्वारा भारत पर आक्रमण किए जाने से दिनकर जी बहुत व्यथित हो जाते हैं। उनका पंडित जवाहरलाल नेहरू के स्वप्नों और उनकी विचारधारा से मोहभंग होने लगता है। अहिंसा एवं शांति के पक्षधर भारत देश के स्वाभिमान को जिस प्रकार से ठेस पहुंची उससे दिनकर जी बहुत दुखी होते

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हैं। उन्होंने दुखी होकर पंडित जवाहरलाल नेहरू जी की विचारधारा पर अपने काव्य के माध्यम से सीधा प्रहार किया–

''घातक है जो देवता सदृश्य दिखता है,
लेकिन कमरे में गलत हुक्म लिखता है,
जिस पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा है,
समझो उसने ही हमें यहां मारा है।''

देश में कुछ व्यक्ति ऐसे भी थे जो राश्ट्रभक्त होने का दिखावा कर रहे थे। ऐसे लोग राष्ट्रप्रेम के नाम पर विनाशकारी युद्धों को जन्म देते हैं और राष्ट्रभक्त के नाम पर राष्ट्रीयता को कलंकित कर देते हैं। इसलिए कवि कहता है–

''खंड प्रलय हो चुका, राष्ट्र देवता! सिधारा,
क्षीरादधि को अब प्रदाह जग का होने दो,
महानाग फण तोड़ अमृत के पास झुकेगा,
विशधर पर आसीन विश्ण–नर को होने दो।''

दिनकर कम उम्र से ही काव्य लिखना प्रारम्भ कर दिये थे किंतु उनका काव्य 'प्रणभंग' में आकर अपना विकसित रूप ग्रहण करता है। इसी काव्य ग्रंथ में उनकी राष्ट्रीयता का स्वर भी देखा जा सकता है। इस खंड काव्य के आरम्भ में ही कवि भारत के स्वर्णिम अतीत का गुणगान करता हुआ दिखाई देता है।

दिनकर ऐसे कवि हैं जो भारत के अतीत के वैभव एवं समृद्धि को का ही बखान नहीं करते बल्कि अतीत की उस वैभव एवं समृद्धि को वर्तमान के धरातल पर भी प्रतिष्ठित करना चाहते हैं–

''प्रिय दर्शन–इतिहास कंठ में जर्मी यहाँ आबाद रहे।
समर क्षेत्र में ज्यों तूने रक्खी माँ के मुख की लाली।
त्यों कब्रों में भी स्वदेश गौरव की करना रखवाली।''

देवत्व के प्रमुख गुणों में अहिंसा, शांति, प्रेम, ईमानदारी, धैर्य आदि हैं। मानव का धर्म देवत्व के धर्म से मिलता जुलता है। कवि के अनुसार देवत्व के ये धर्म और गुण वहीं पूर्णता सफल और सार्थक होते हैं जहां इसका आदर और सम्मान करने वाले लोग होते हैं। जहां पर राक्षसी प्रवृत्ति के,

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बर्बर और हिंसा करने वाले लोग होते हैं वहां यह गुण अपना साकार रूप नहीं ले पाते हैं–

''तृणाहार कर सिंह भले ही फूले, परमोज्ज्वल देवत्व प्राप्ति के मद में।
पर हिस्त्रों के बीच भोगना होगा, नख–रद के क्षय का अभिशाप उसे ही।''

दिनकर ऐसे साहित्यकार है जो भारत को इतना ऊंचा देखना चाहते थे कि अन्य देश भारत का अनुसरण करें। आज देश के नागरिकों को जगाने की जरूरत है। स्त्रियों (विशेषतः ग्रामीण स्त्रियाँ) को उनके अधिकारों एवं उत्तरदायित्व से परिचित करना आवश्यक है। दिनकर का साहित्य इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उनका साहित्य–संसार हमारे लिए पथ–प्रदर्शक का कार्य करता है। दिनकर के साहित्य में दिए गए संदेश को ग्रहण करके हम अपने जीवन को उन्नत बना सकते हैं और एक आदर्श समाज की स्थापना कर सकते हैं। शोध का महत्व एवं उपयोगिता इस दृष्टि से भी है कि यह नारी–वर्ग का आदर व सम्मान करने की बात कहता है।

निष्कर्षः उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि रामधारी सिंह दिनकर के विशाल साहित्य में जन जागरण एवं राष्ट्रीय चेतना का स्वर जिस व्यापकता के साथ अजस्त्र–वेग से प्रवाहित हुआ है, वैसा शायद अन्य किसी साहित्यकार की रचनाओं में मिलना दुर्लभ है। वास्तव में दिनकर का 'दिनकरत्व' रेणुका, हुंकार , रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र और परशुराम की प्रतीक्षा में पूरे तेज एवं चमक के साथ दिखाई देता है। दिनकर के साहित्य का एक–एक शब्द तत्कालीन परिवेश में जागृति, जीवन और चुनौती का संचार करता है। राष्ट्रकवि दिनकर के साहित्य के बारे में हम यह आसानी से समझ पाते हैं कि दिनकर का साहित्य किस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम के समय जन–जागरण तथा नारी चेतना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दिनकर का साहित्य हमें भारतीय संस्कृति के गौरव तथा उसकी मर्यादा को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

संदर्भः

गुप्ता, गजेन्द्र –आधुनिक हिंदी कवियों के काव्य सिद्धांत, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली 2009

टंडन, प्रेमनारायण–आधुनिक हिंदी कवियों की काव्य कला, हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, 2009

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शर्मा, मन्मथनाथ–आज के लोकप्रिय कविः रामधारी सिंह 'दिनकर', राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2009
अवस्थी, मोहनलाल –आधुनिक हिंदी काव्य–शिल्प, हिंदी परिषद प्रकाशन, प्रयाग, 2002
तिवारी, रमाशंकर– दिनकर की उर्वषी, विद्या भवन, वाराणसी, 2002
राजकुमार–भारत का इतिहास, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 2002
जैन, निर्मला–आधुनिक हिंदी कविता में रूप विधाएं, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1963
दाभाड़े, रामनंदन–आधुनिक हिंदी महाकाव्यों का शिल्प विधान, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, 2003
सिन्हा, सुरेश–हिंदी उपन्यासों में नायिका की पकिल्पना, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 2004
सोलंकी, सीमा–नारी चेतना और कृश्णा सोबती के उपन्यास, अषोक प्रकाषन, दिल्ली 2004

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies